वेदविद्यासमुद्धारक विद्या वाचस्पति पं0 मधुसूदन शर्मा मैथिला

वेद विद्या समुद्धारक, समीक्षा चक्रवर्ती, विद्यावाचस्पति

पं0 मधुसूदन शर्म्म जी का जीवन-परिचय

-: लेखिका :-

नीलम शर्मा

-: प्रकाशक :-

पं0 मधुसूदन शर्मणः वेद विज्ञान शोध केन्द्र

गाढ़ा, सीतामढ़ी (बिहार)- 843323

सम्पादक :

डा0 स्वाति झा

एम. ए., पी. एच. डी.

ग्राम+पो0- गाढ़ा,

अंचल- रून्नीसैदपुर,

जिला- सीतामढ़ी

पिन-843323

मुल्य :

पुस्तक का पठन।

मुद्रकः

माँ जानकी डिजिटल प्रिंटर्स,

किरण सिनेमा के पीछे, सीतामढ़ी

ॐ

!! श्री गणेशाय नमः !!

श्री मधुसूदनाय नमः

यदा यदा हि धर्म्मस्य ग्लार्निभवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

जब-जब वैदिक सत्यविद्या अज्ञान धूम से आवृत होने लगती है और मोहवश जनता का विश्वास हटने लगता है, तब परमेश्वर की प्रेरणा से कोई शक्ति प्रकट होकर सत्य विद्या व सत्य धर्म को राहु ग्रास से मुक्त कर अज्ञान का नाश कर देती है। वेद एक सत्य विद्या है और वैदिक धर्म सत्य धर्म है, जो सनातन धर्म का मूलाधार है। अतएव इनकी रक्षा का आयोजन ईश्वर की ओर से समय-समय पर सदा होता आ रहा है। वेद सत्य विद्या का पर्याय है तथा सभी प्रकार के विज्ञानों का मूल स्त्रोत है। भारतीय विज्ञान सूर्य के प्रकाश का पूर्ण विवरणात्मक इतिहास है। वैदिक धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है। भारत के कई योग्य आधुनिक विद्वानों ने वेद गौरव शिक्षा के लिए वस्तु विज्ञान से वेद का सम्बन्ध दिखाने का प्रयत्न किया परन्तु भारतीय शास्त्रों की नियत परिभाषा के अनुसार क्रम-बद्ध विज्ञान का मूल वेद में न बताया जा सका और बिना उसके वैज्ञानिकों का विश्वास उस विवरण पर नही जम सकता था।

किन्तु जगत्रियन्ता को यह कब सहन हो सकता था कि सत्यविद्या का गौरव विज्ञान के मध्याह काल में छिपा रह जाये? उसने एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को संसार क्षेत्र में उतार दिया, जिसने उसी जगत्रियन्ता की कृपा से अपनी सारी जिन्दगी वैदिक-विज्ञान और वैदिक इतिहास के अन्वेषण में लगाकर उक्त महत्वपूर्ण विज्ञान और इतिहास का एक क्रमबद्ध सूत्र तैयार कर ही डाला जिनके अतुल परिश्रम और अलौकिक प्रतिभा के प्रकाश से अनेक शताब्दियों से अमूल्य विज्ञान रत्न को अपने उदर में छिपा रखनेवाली गुहा का द्वार आज देखने में आ गया और उसमें प्रवेश करने वाले को परम सौकार्य मिल गया।

वह व्यक्ति हमारे चरित्र नायक गुरूवर, जयपुर महाराज सवाई माधव सिंह जी के प्रधान राजपंडित, वेद विद्या समुद्धारक, समीक्षा चक्रवर्ती, महामहोपदेशक, विद्या वाचस्पति पंडित मधुसूदन शर्मा (ओझा, झा) हैं।

इनके जीवन परिचय पर देश के कई प्रकाण्ड विद्वानों ने इनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर लिख चुके हैं उनके सामने मेरी क्या विसात कि कुछ भी लिख सकूँ। मुझे तो पं० मधुसूदन शर्मणः जी के अतुल बौधिक सम्पदा से परिपूर्ण परिवार में वर्ष 1969 में उनके प्रपौत्र पद्मवीर शर्मा जी के सहधर्मिणी के रूप में परिवार का अंग बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तब से आज तक परिवार के बड़ों-बुजुर्गों से बहुत कुछ जानने सुनने को मिला। मैं पं० मधुसूदन जी के पौत्र पद्मनाभ शर्मा जी, पौत्र-वधु श्रीमती पद्मिनी शर्मा जी, पौत्री शान्ता शर्मा जी एवं पं० रघुनाथ झा जी के पौत्र गुरूवर पं० ताराकान्त झा जी से तथा प्रपौत्र पद्मवीर शर्मा जी से उनके बारे में बहुत कुछ सुनी हूँ। पं० जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के बारे में हैदराबाद युनिवर्सिटी के पूर्व आचार्य पं० बासुदेवा शास्त्री, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी के वैदिक दर्शन विभाग के अध्यक्ष आचार्य पं० श्री कृष्ण त्रिपाठी जी, आचार्य डा० धनन्जय कुमार पाण्डेय जी, ज्योतिष विभाग के आचार्य डा० शत्रुघ्न त्रिपाठी जी से तथा स्थानीय तत्कालीन जमींदार बाबू श्री धर नारायण सिंह जी के पौत्र स्वध्यायी श्री नन्द किशोर सिंह जी से जानने-सुनने का सौभाग्य प्राप्त है।

पं० मधुसूदन जी की जीवनी एवं कृतित्व तो लगभग उनके सभी प्रकाशित ग्रन्थों में उल्लिखित है अलावे गूगल **(Google)** पर भी उपलब्ध है। उनके स्मृति में समय-समय पर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के वैदिक दर्शन विभाग द्वारा स्मृति संवाद एवं वेदांत पर राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया जाता रहा है। वर्ष 2017 में हुये आयोजन में प्रो० सुधाकर मिश्र जी द्वारा बीज वक्तव्य की प्रथम पृष्ठ की एक प्रति संलग्न कर रही हूँ।

राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा महामान्य पं० मधुसूदन ओझा जी की 156 वीं जन्म जयन्ती 20.08. 2022 को मनाई गई जिसमें प्रो० (डॉ०) गणेशीलाल सुथार, राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान, पूर्व निदेशक पंडित मधुसूदन ओझा शोध प्रकोष्ठ, संस्कृत विभाग, जे० भी० यूनिवर्सिटी, जोधपुर द्वारा उनके कृतित्व पर एक लेख प्रकाशित किया गया जिसकी प्रति संलग्न कर रही हूँ।

राजस्थान संस्कृत अकादमी

पण्डित मधुसूदन ओझा की 156वीं जन्मजयन्ती

आज़ादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत

दिव्य प्रतिभ अन्तर्दृष्टि से 'वेदविज्ञान' के प्रथम प्रतिपादक महामहोपदेशक विद्यावाचस्पति समीक्षा चक्रवर्ती पण्डित मधुसूदन ओझा (मैथिल) की 156-वीं जन्मजयन्ती (श्रीकृष्णजन्माष्टमी-20 अगस्त 2022) के पावन असवर पर वेदरहस्योद्घाटन के क्षेत्र में उनके महतो महयान और सर्वातिशायी अवदान का स्मरण प्रत्येक वेदविद्यानुरागी का कर्तव्य है। यह सत्य और तथ्य है कि वे आधुनिक युग के वेदव्यास थे। यह कोई अत्युक्ति नहीं है कि 'समस्त वेदों के द्वारा एकमात्र वेद्य तथा एकमात्र वेदान्तकृत तथा वेदविद् (भगवद्गीता 15/15) अव्यय पुरूषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण के अंशावतार के रूप में आधुनिक युग में लब्धजन्मा पण्डित मधुसूदन ओझा ने संस्कृत में रचित 108 ग्रन्थों द्वारा वेदार्थविषयक समस्त विप्रतिपत्तियों और भ्रान्तियों का निवारण किया था।

इस शुभावसर पर पण्डित ओझा जी के वेदविज्ञानसम्बन्धी किसी एक सिद्धान्त का शास्त्रीय प्रतिपादन विस्तारभय से अपेक्षित न होने के कारण उनके वैदविज्ञानविषयक कतिपय मौलिक सिद्धान्तों को बिन्दु रूप में रेखांकित करना सर्वथा उचित तथा उपयोगी होगा-

1. पण्डित ओझा जी का अवदान यह है कि उन्होने वेदसंहिताओं, ब्राह्मणग्रन्थों, आरण्यकों और उपनिषदों की समष्टि को 'कृत्स्न वेदशास्त्र' के रूप में स्थापित किया। पाश्चात्य पद्धति के अनुयायी आधुनिक भारतीय वेदज्ञों तथा दार्शनिकों ने उपनिषत् श्रुति को मन्त्रब्राह्मणात्मक श्रुति से विभक्त कर दिया जो पण्डिज ओझा जी को सर्वथा अस्वीकार था। उन्होनें 'शारीरकविमर्शः' नामक महाग्रन्थ में स्पष्ट संकेत किया है कि वेदशास्त्र छ्विविध है- ब्रह्म तथा ब्राह्मण। ब्राह्मणग्रन्थ के तीन पर्व (भाग) है- विधिकाण्ड, आरण्यकाण्ड और उपनिषत् काण्ड। यज्ञविधि कर्मकाण्ड है, आरण्यक उपासनाकाण्ड है और उपनिषत् ज्ञानकाण्ड है। इस प्रकार सम्पूर्ण वेद की मन्त्रब्राह्मणात्मकता सिद्ध हो जाती है।

2. पण्डित ओझाजी ने ही इनम्प्रथमतया वेदशास्त्र के प्रतिपाद्य विषय का चतुर्धा विभाग किया है जैसा कि उनके ग्रन्थशिरोमणि (**A specimen of superhuman scholarship**) 'ब्रह्मसिद्धान्त' के प्रारम्भ में संकेतित है -

यज्ञश्च विज्ञानमथेतिहासः स्तोत्रं तदित्थं विषया विभक्ताः।

वेदे चतुर्धा त इमें चतुर्भिग्रन्थैः पुथक्कृत्य निरूपणीयाः।।

वेद प्रतिपादित विषयों के चतुर्थ विभाग के कारण ही पण्डित ओझाजी ने इन विषयों के रहस्यविज्ञान-प्रतिपादक स्वरचित ग्रन्थों का भी चतुर्धा विभाग किया है-

1. ब्रह्मविज्ञान
2. यज्ञविज्ञान
3. इतिहासपुराणसमीक्षा
4. वेदांगसमीक्षा।

3. अधिकतर आधुनिक वेदज्ञ पुराणशास्त्र को वेदशास्त्र से सर्वथा असम्बद्ध मानते है। पण्डित ओझाजी ने ही इनम्प्रथमतया पुराणशासत्र को भी वेदशास्त्र से सुसम्बद्ध तथा सुसमन्वित कर ''इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्'' इस उक्ति को सर्वथा चरितार्थ किया है। उनके अनुसार पुराणशास्त्र में वेदसम्मत सृष्टिविज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

4. यह भी उल्लेखनीय है कि पण्डित ओझाजी ने 'शारीरकविमर्शः' नामक महाग्रन्थ में आत्मनिरूपक शास्त्रों का पाञ्चविध्य माना है-

1. चतुर्वेदशास्त्र (श्रुति)
2. उपनिषत् नामक वेदान्तशास्त्र (श्रुति)
3. नाना आर्षेय दर्शनशास्त्र (स्मृति)
4. ब्रह्ममसूत्रनामक ब्रह्ममीमांसाशास्त्र (विज्ञानशास्त्र)
5. भगवद्गीतोपनिषत् नामक योगशास्त्र (विज्ञानशास्त्र)

5. पण्डित ओझाजी ने कतिपय आधुनिक भारतीय दर्शनिकों द्वारा ब्रह्ममीमांसाशास्त्र 'ब्रह्मसूत्र' के लिए वेदान्तशास्त्र शब्द का प्रयोग अनुचित माना है, क्योकि उपनिषदों के लिए वेदान्त शब्द स्वीकृत है।

6. पण्डित ओझाजी ने ही 'शरीरकविमर्शः' नामक महाग्रन्थ में वेद के पौरूषेयापौरूषेयत्व (**Personal origin and impersonal revelation**) की महती विप्रतिपत्ति का निरास करते हुए कहा है कि विज्ञानवेद अपौरूषेय है और शास्त्रवेद (शब्दमय वेद) पौरूषेय है। उन्होने ही दिव्य प्रतिभ अन्तदृष्टि से यशब्दमय वेद (शास्त्रवेद) के विषय में छः प्रमुख प्रचलित मतों तथा उनके अवान्तर मतों से युक्त कुल अड़तालीस मतों को इदम्प्रथमतया उद्धरणपूर्वक विवेचन किया है जो अतिविस्मयकारी है। यह विवेचन वेदशास्त्र तथा भारतीय दर्शनशास्त्र के विद्वानों और विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की दृष्टि से अत्यधिक उपादेय है।

7. पण्डित ओझाजी ने ही प्राचीन श्लोकक्रमानुसारी भाष्यपद्धति को छोड़कर प्रतिपाद्याविषयक-विभाग के अनुसार 'श्रीमद्भगवद्गीताविज्ञानभाष्यम्' में व्याख्या करते हुए इदम्प्रभमतया चतुविधं बुद्धियोग और उसकी प्रतिपादक चतुर्विध विद्या (राजर्षिविद्या, सिद्धविद्या, राजविद्या, आर्षविद्या) का सुक्ष्म विवेचन किया है।

8. पण्डित मधुसूदन ओझाजी ने ही अव्यय, अक्षर, क्षर पुरूषों की समष्टि पर आधारित त्रिपुरूषवाद तथा षोडशी (षोडशकाल) पुरूष के सम्प्रत्यय का इदम्प्रथमतया लक्षणपूर्वक विस्तृत प्रतिपादन किया है।

9. पण्डित ओझाजी ने ज्ञान और विज्ञान का वेदानुसारी भेदक लक्षण प्रस्तुत कर भ्रान्ति का निवारण किया है। एकत्व की प्रतीति ज्ञान है और अनेकत्व की प्रतीति विज्ञान। विज्ञान शब्द से सृष्टिविज्ञान और ज्ञान शब्द से आत्मैकत्वप्रतिपत्ति अभीष्ट है।

10. पण्डित ओझाजी ने गीता में प्रयुक्त 'अहम्' (अस्तम्) शब्द के वाच्य के रूप में व्यावहारिक दृष्टिकोण से कृष्ण के त्रैविध्य (मानुष, कृष्ण, दिव्य कृष्ण और गीताकृष्ण) का निरूपण कर पारमार्थिक दृष्टिकोण से कृष्णत्रय की एकात्मता का प्रतिपादन किया है।

11. पण्डित ओझाजी ने ही 'द्रष्टुर्वचनं श्रुतिः' और 'श्रोतुर्वचनं स्मृतिः' इस प्रकार अतिसंक्षिप्त परन्तु सार्थक लक्षण प्रस्तुत कर श्रुति और स्मृति के वास्तविक भेद का विवेचन किया है जो 'शारीरकविमर्शः नामक ग्रन्थ में द्रष्टव्य है। उनके विवेचन से 'कर्णकर्णि (कानो-कान) प्रवाह (परम्परा) से श्रुत शास्त्र - श्रुति का यह भ्रान्त लक्षण खण्डित हो जाता है।

पण्डित ओझाजी ने 'श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषत्' में प्रयुक्त उपनिषत् शब्द की उपपत्ति (तर्कसंगति, **Justification**) के लिए शंकानिरासपूर्वक उपनिषद् का व्यापक (अव्याप्ति दोष से रहित) और मौलिक लक्षण प्रस्तुत किया है जो संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है-

''कममणाभितिकञ्तव्योपपादिका विद्या उपनिषत्''। उनके अनुसार आत्मविद्यात्व उपनिषत् शब्द का पदार्थतावच्छेक नहीं है। इस प्रकार आधुनिक युग के ऋषि वैज्ञानिक पण्डित ओझाजी ने ईश्वर के निर्देशानुसार वेदविज्ञान का मार्ग प्रदर्शित किया है जैसा कि स्वयं उन्होने संकेत किया है-

ईश्वरों भगवानेष मार्ग दर्शितवान् यथा।

तद्वाक्येनेव तं मार्ग स्पष्टे वो

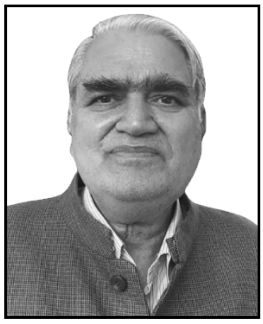

प्रो0 (डॉ0) गणेशीलाल सुथार)

राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान।

पूर्व निदेशक- पण्डित मधुसूदन ओझा शोध

प्रकोष्ट- संस्कृत विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं शंकर शिक्षायतन एवं विद्याश्री न्यास द्वारा आयोजित पंडित मधुसूदन ओझा स्मृति-संवाद दिनांक 07 नवम्बर 2017 का वीज बक्तव्य

पण्डित मधुसूदन ओझा स्मृति-संवाद एवं 'वेदांत' पर राष्ट्रीय परिसंवाद

7 नवम्बर 2017

पं0 मधुसूदन ओझा स्मृति-संवाद

विद्यावाचस्पति श्रीमधुसूदन ओझा का जन्म बिहार प्रान्त में मुजफ्फरपुर जिले के गाढ़ा नाम ग्राम में विक्रम संवत् 1923 में श्री कृष्णजन्मअष्टमी के दिन हुआ था। आपके मैथिल कुल में पारम्परिक शास्त्र निष्णात विद्वानों की महती परम्परा रही है। आपके पिता का नाम वैद्यनाथ ओझा था, जिनकी देखरेख में गाँव पर ही आठ साल की अवस्था में उपनयन के अन्नतर आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सम्पन्न हुई। पण्डित वैद्यनाथ ओझा के बड़े भाई श्री पण्डित राजीव लोचन ओझा जी उस समय जयपुर के महाराज राम सिंह के राजपण्डित थे, जिन्होने श्री मधुसूदन ओझा जी को गोद ले रखा था। जयपुर महाराज के द्वारा ही इनकी शिक्षा-व्यवस्था की गयी थी। व्याकरणाशास्त्र के धुरन्धर विद्वान श्री विश्वनाथ जी से आपने लघुसिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन किया था। जयपुर राजकीय पाठशाला के प्रधानाध्यापक सर्वशास्त्र पारंगत पं0 श्री रामभजन जी से आपने सिद्धान्त कौमुदी ग्रन्थ का अध्ययन किया था। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में श्री ओझा जी के पोषक पिता श्री राजीवलोचन ओझा जी का देहावसान होने के पश्चात आप अपने गाँव आ गये। पं0 ओझा ने विद्यारस से आकृष्ट होकर काशी में आकर दरभंगा संस्कृत पाठशाला में सर्वशास्त्र निष्णात जगत प्रसिद्ध विद्वान श्री शिव कुमार शास्त्री जी के चरणों में रहकर आठ नौ वर्ष लगातार, व्याकरण, न्याय, भीमांसा, साहित्य, वेदान्त शास्त्रो का अध्ययन किया। इसके बाद ओझा जी पुनः जयपुर पहुँचकर राजकीय महाराज आट्र्स कालेज में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, तत्कालीन जयपुर नरेश महाराज माधव सिंह के प्रधान पण्डित तथा पोथीखाना के प्रबन्धक रहे एवं उनकी गणना जयपुर नरेश के नवरत्नों में की जाती रही। श्री ओझा जी ने जिन पांच स्तम्भों के ऊपर अपना ग्रन्थ-प्रासाद निर्मित किया है, उनमें ब्रह्म विज्ञान, यज्ञ विज्ञान, इतिहास, वेदांड्ग, समीक्षा और आगम रहस्य है। पं0 ओझा जी ने ब्रह्म विज्ञान संबंधी 40, यज्ञ विज्ञान के 20 तथा इतिहास से सम्बन्धित 18 ग्रन्थों को रचा है। वेदांग समीक्षा के 30 और आगम रहस्य के 120 ग्रन्थ आज भी दुर्लभ पांडुलिपियों में विद्यमान है। इस प्रकार 228 ग्रन्थ इन विद्या वैभव को अब भी आलोकित कर रहे है।

श्री शंकर शिक्षायतन एवं विद्याश्री न्यास द्वारा वर्ष 2013 से प्रतिवर्ष पं0 मधुसूदन ओझा जी स्मृति-संवाद के रूप में उनकी वैचारिकी पर केन्द्रित परिसंवाद के माध्यम से उनके पुण्य स्मरण का संकल्प लिया गया है। इसके अन्तर्गत 2013 में उनके शारीरिक विज्ञान और 2014 में संस्कृत कृति, 2015 में वेद-विज्ञान एवं 2016 में यज्ञ-विज्ञान विषयक विचारों पर परिसंवाद आयोजित किये गए। इस वर्ष यह स्मृति संवाद उनके वेदांत संबंधी विचारों पर केन्द्रित है।

पद्मवीर जी को स्थानीय मानिकचौक निवासी गुरूवर पं० जीवेश्वर झा जी (महाशय जी) गुरूवर पं० बलदेव झा जी, गुरूवर पं० भरत झा जी, गुरूवर ज्योतिषाचार्य पं० रामचन्द्र झा जी, गुरूवर पं० लक्ष्मीकान्त झा जी, गुरूवर पं० चन्द्रकान्त झा जी, श्रद्धेय पं० डा० बच्चा ठाकुर जी से पं० मधुसूदन शर्मा जी के विषय में चर्चायें होती रही है। जिसका उल्लेख मैं सुनती रही हूँ। वर्ष 1962 में पद्मवीर जी को कुछ महिने अपने पितामह पं० प्रद्युम्न ओझा जी के साथ जयपुर में रहने का मौका मिला था। उस अवधि में पं० प्रद्युम्न जी नित्य शायं पद्मवीर जी को अपने पास बुला-बैठाकर तरह-तरह के ज्ञान की बातें, पं० मधुसूदन जी के वेद ग्रन्थों के सम्बन्ध में, ब्रहमाण्ड आदि की बातें बताया करते थे जिसका जिक्र मैं उनसे सुनी हूँ।

इन्ही बातों के आधार पर मैं पं० मधुसूदन झा जी के परिवार, उनका व्यक्तित्व, उनके कृतित्व को लेखबद्ध करने का प्रयास कर रही हूँ। मेरे द्वारा पं० जी की जीवनी पर लिखा लेख वर्ष 1982 में गुरूवर पं० भरत झा जी द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'मिट्टी के गाँव' में भी प्रकाशित हुई थी।

विद्यावाचस्पति पंडित मधुसूदन शर्मणः मैथिला

आर्यावर्त के जम्बु द्वीप के भारत खण्ड के बिहार प्राप्त के तत्कालीन जिला मुजफ्फरपुर, वर्त्तमान जिला सीतामढ़ी के अंचल रून्नीसैदपुर अन्तगर्त ग्राम- गाढ़ा (बहिलवारा उर्फ गाढ़ा) के मैथिल ब्राह्मण परिवार, शाण्डिल्य गोत्रीय, जजुआरे उदनपुर मूल वंश के पं० वैद्यनाथ झा जी के पुत्र के रूप में पं० मधुसूदन झा जी का शरीरोदय विक्रम संवत 1923 के भाद्र कृष्ण अष्टमी (1 सितम्बर 1866) को रात्री 10.30 में मृगरिषा राशि में हुआ था।

मैथिल ब्राह्मण परिवार के पं० देवनाथ झा जी के तीनो पुत्रों क्रमशः 1. पं० राजीव लोचन झा, 2. पं० वैद्यनाथ झा एवं 3. पं० रघुनाथ झा थे जिनमें राजीव लोचन झा ज्योतिष के प्रकांड विद्वान थे जो जयपुर महाराज राम सिंह जी जो स्वयं विद्वान एवं गुण ग्राही थे के दरबार में राज पंडित थे। इनके ज्योतिष ज्ञान से महाराज राम सिंह जी अत्यधिक प्रभावित थे अतः वे हर शुभ कार्य इन्ही के परामर्श से शुभ लग्न पर करते थे। इन्होंने 'धर्म चन्द्रोदय' नामक ग्रन्थ की रचना की जो सोलह कलाओं में विभक्त है इसमें श्रुति, स्मृति, प्रामाण्यनिरूपन युक्तिक प्रायः सभी धर्म शास्त्रीय विषयों का विवेचन है।

पं० राजीव लोचन जी को जयपुर महाराज राम सिंह जी द्वारा अतुल सम्मान एवं पूर्ण जीविका प्राप्त थी। इन्हे कोई संतान नहीं था अपितु इन्होनें अपने छोटे भाई पं० वैद्यनाथ झा के प्रतिभावान पुत्र मधुसूदन झा जी को अपना दत्तक पुत्र बना लिया और उनको 7 वर्ष की आयु पूरी होने पर स्वयं आचार्य बनकर यज्ञोपवित कराये और दरभंगा महाराज रामेश्वर सिंह संस्कृत विद्यालय में शिक्षा आरम्भ करायें। उन दिनों राजवंश की परम्परा के अनुसार राजा का पुत्र ही राजा होता था तथा राज पुरोहित के पुत्र ही राज पुरोहित हुआ करते थे अतः पं० राजीव लोचन झा जी वि. सं० 1932 (वर्ष 1875 ई०) में मधुसूदन जी को अपने साथ लेकर जयपुर चले आये। यहाँ इन्होने अपने उत्तराधिकारी पुत्र मधुसूदन झा जी को अपनी देख-रेख में सुयोग्य पंडितो से शिक्षा-दीक्षा करवाये। पं० मधुसूदन झा जी ने मैथिल विद्वान पं० विश्वनाथ झा जी से लघु सिद्धान्त कौमुदी, तत्कालीन संस्कृत पाठशालाध्यक्ष रामभज जी सारस्वत जी से सिद्धान्त कौमुदी का सम्यक अध्ययन किया। दोनो विद्वान पं० मधुसुदन झा के ग्राह्य शक्ति से अत्यधिक प्रभावित एवं चमत्कृत थे।

पं० राजीव लोचन झा जी अपने साथ अपने दत्तक पुत्र को भी महाराजा से मिलाने ले जाते। इस बालक के मुखमंडल पर सूझ एवं समझ की तेज देखकर महाराज कहा करते थे कि यह बालक बहुत होनहार है। पंडित मधुसूदन जी महाराज के प्रेमपूर्वक किसी प्रश्न का बड़ी मधुरता एवं बुद्धिमता से उत्तर देते। यह क्रम चल ही रहा था कि संवत् 1937 (वर्ष 1880 ई०) में महाराजा रामसिंह जी एवं वि० सं० 1939 (वर्ष 1882 ई०) में पंडित राजीव लोचन झा जी स्वर्गवास हो गया। बदली हुई परिस्थितियों में राज्याधिकारियों ने उनकी जागीर के कुछ अंश का प्रतिग्रहण कर लिया। अतः किशोर मधुसूदन जी अपनी पितृव्य-पत्नी के साथ स्वदेश (मिथिला) लौट गये। उस समय उनकी अवस्था 15-16 वर्ष की ही थी। परन्तु अध्ययन के प्रति उनकी रूचि अत्यन्त प्रबल हो उठी थी।

उन्होने उच्च अध्ययन के लिए किसी तरह परिवार वालो को सहमत कर अपने कान का कुण्डल बेचकर उसी पैसों से वे काशी चले गए। काशी में दरभंगा संस्कृत पाठशाला जो दशश्वमेघ घाट के निकट दरभंगा घाट के किनारे था में प्रविष्ट हुए जहाँ उनको सर्वशास्त्रपारंगत जगतप्रसिद्ध विद्वानशिरोमणि पं० शिव कुमार शास्त्री जी का शिष्य बनने का सौभाग्य मिला। शास्त्री जी की चरणों में आठ-नौ वर्षो तक बैठकर पूरी लगन और परिश्रम के साथ व्याकरण, न्याय, मीमांत साहित्य और वेदान्त आदि सभी विषयों का गहन अध्ययन करके उनपर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया। स्वयं शास्त्री जी भी उनकी प्रतिभा और विषयनिरूपण शैली से प्रभावित होकर उन्हे यथार्थ

प्रतिभाभान प्राप्त होने का आर्शीवाद दिया। पं० शिवकुमार मिश्र शास्त्री के प्रपौत्र पं० श्री विद्युशेखर मिश्र वनारस में अधिवक्ता है, जिनके घर जाने और मिलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है।

पंडित राजीव लोचन ओझा जी के एक मेरठ निवासी मित्र ज्योतिषी, मधुसूदन जी की जन्मकुंडली देखकर रूद्रसंहिता के अनुसार जो फलादेश लिखा उसमें यह भी अंकित किया- ''कामेश्वर शिवस्तस्य भक्ति मुक्तिपदायकः''। विद्याध्यन हेतु काशी में निवास करते हुये पंडित मधुसूदन जी वनारस के मछोदरी जो पहले श्मशान हुआ करता था, स्थित कामेश्वर महादेव की नित्य आराधना किया करते थे। सुना जाता है कि उनकी आराधना से प्रसन्न होकर कामेश्वर महादेव ने उनपर विशेष कृपा बरसाई। वहाँ के निर्मित चित्रों से प्रभावित होकर जयपुर के सूरतखाना के संग्रह में कामेश्वर-कामेश्वरी के सुन्दर चित्र पंडित जी ने बनाया है। पंडित जी चित्रों के पारखी थे स्वयं भी रेखांकन एवं चित्रांकन में अभ्यस्त थे।

एक यज्ञ के समय उन्होने स्वयं कलश गणेश की स्थापना कर गणेश जी से ही बीज मंत्र की दीक्षा लेकर दीक्षित हुए थे। 17 वर्ष की अवस्था में वि० सं० 1940 (वर्ष 1883 ई०) को पंडित जी का विवाह अलवर के राजगुरू पं० चंचलनाथ झा जी की ज्येष्ठ पुत्री **सरस्वती कुमारी** से हो गया था। पंडित जी के विवाह के सम्बद्ध एक रोचक प्रसंग कहा जाता है एक दिन चंचलनाथ जी अपने जामाता को अपनी बग्घी में बैठा कर घर से ले जाते समय रास्ते में कहा- - ''गणयति कष्टमहो न साभिलाषः''- इस समस्या का पूर्ति किजीए- पंडित जी ने सद्य रचित यह पद्य सुनाया-

रथ-गज-वाजि विहारि कोमलाङ्गः

शिशुरपि राजकुमार रामचन्द्रः।

समुनि पदातिवदेति ही विदेहान्।

गणयति कष्टमहो न साभिलाषः॥

काशी में अध्ययन पूर्ण कर पंडित जी बूँदी, कोटा, झालरापाटन, रतलाम आदि स्थानों की यात्रा करते हुए जयपुर आयें। विशेषतः बूँदी के प्रधानामात्य पंडित गंगासहाय जी उनकी विशेष योग्यता से प्रभावित होकर उनका राज सम्मान किया। रतलाम में प्रवास के समय पंडित जी ने जगद्गुरू शंकराचार्य द्वारकापीठाधीश्वर श्री माधवतीर्थ जी की पर्यटन मीमांसा नामक ग्रन्थ लिखने में बहुत सहायता की थी। जयपुर में आते ही पंडित जी महाराजा कॉलेज में संस्कृत प्रोफेसर नियुक्त हुए। कुछ समय संस्कृत कॉलेज में वेदान्त के प्रधान अध्यापक का कार्य भी किए। उन्ही दिनों हरिदास जी के पास सिंहली लिपी में लिखित कुमारदासकृत ''जानकीहरण'' की एक प्रति

का सम्पादन कार्य पंडित जी बड़े परिश्रम से पूरा किया। पंडित जी का यही सम्पादन कार्य सन् 1893 ई0 में प्रकाश में आया। महाराजा सवाई माधव सिंह (द्वि0) के समय में मोद मंदिर सभा का पुनर्गठन हुआ तो श्री कृष्ण शास्त्री द्रविड जी ने पंडित मधुसूदन जी के नाम का प्रस्ताव किया। तब से वे इस सभा के सदस्य बने आगे चलकर अध्यक्ष नियुक्त हुए और आजीवन उसी पद पर बने रहे।

जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई माधव सिंह (द्वि0) ने वृन्दावन धाम में एक विशाल मंदिर का निर्माण कराया इस मन्दिर प्रतिष्ठा मुहुर्त को लेकर जयपुर के ज्योतिषियों में विवाद हो गया। राज्य के प्रधान ज्योतिषी पं0 केवल राम जी श्रीभाली ने शोध कर जो मुहुर्त निकाला वह महाराज संस्कृत पाठशाला के प्रधान ज्योतिषाध्यापक भैया जी मैथिल को स्वीकार्य नही हुआ। पं0 मधुसूदन ओझा जी ने गंभीर अध्ययन कर प्राचीन प्राचीनतम ग्रन्थों से प्रमाण देते हुए केवलराम जी द्वारा निकाले हुए मुहुर्त में 44 दोष बताये इनका खंडन कोई भी पंडित नहीं कर सके। इस विवाद विवरण को सुनकर महाराज के मन में पंडित जी के लिए और भी श्रद्धा और सम्मान उत्पन्न हुआ।

उन्ही दिनों तत्कालीन प्रधान अमात्य बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी ने अपने नवनिर्मित विशाल भवन पर एक स्वाध्याय यज्ञ का आयोजन किया। उसमें पंडित ओझाजी ने बाल्मीकि रामायण का प्रवचन करते हुए ऐसे नये-नये अर्थो का उद्घाटन किया जिसे सुनकर बड़े-बड़े मार्मिक विद्वान बहुश्रुत राजकर्मचारी, गुणग्राही सभ्यगण बहुत ही प्रसन्न एवं चमत्कृत हुए। महाराजा भी वहाँ कथा श्रवण करने जाते थे। पंडित जी की प्रखर प्रतिभा से वे प्रभावित हुए बिना न रहे और उन्होने पंडित जी को प्राध्यापकी से निर्मुक्त कर अपने निकट बुला कर निजी वर्ग में सम्मिलित कर लिया। पोथीखाना के रिक्त, अधिकारी पद पर महाराजा माधव सिंह जी के संकेत पर पंडित मधुसूदन ओझा जी ने आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। पोथीखाना में कार्यारम्भ के पश्चात पंडित जी का महाराजा के साथ नित्य सम्पर्क और बढ़ गया। महाराजा में इस नित्य सम्पर्क के कारण ऐसी रूचि उत्पन्न हुई कि पंडित जी से कुछ समय बातें करना उनकी दैनिक चर्या का एक अंग बन गया। पास एवं दूर के प्रवासों में भी पंडित जी उनके साथ रहते थे। अच्छे अश्वारोही के कारण आखेट-अभियानों में भी वे महाराजा के साथ रहते थे।

अन्यान्य शास्त्रों के अतिरिक्त पं0 मधुसूदन जी नीतिशास्त्र में भी निपूण थे। महाराजा नीति विषयक प्रसंगों पर भी उनसे परामर्श लेते थे। वे महाराजा के निजी मण्डल के नवरत्नों में

गिने जाते थे। सवाई माधव सिंह (द्वि) के नवरत्न और चौदहरत्न शीर्षक चित्रों में पंडित जी प्रमुख रूप से चित्रित है। राजसभा में उनका बैठक का सम्मान मिला हुआ था। पंडित जी वरिष्ठ राजपंडित थे। राज में और राजगृह (जनानी-मर्दानी ड्योढ़ी) में कोई भी धर्मिक कार्य उनकी सहमति के बिना नहीं होता था।

सन् 1902 इंगलैन्ड के सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेकोत्सव में महाराजा सवाई माधव सिंह को आमंत्रित किया गया अब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि प्राक्तन मान्यानुसार निषिद्ध समुद्रयात्रा की जाये या नही। प्रधान राज पंडित मधुसूदन जी के निर्णयानुसार यह स्वीकार किया गया कि महाराजा अपने इष्टदेव श्री गोपाल जी की प्रतिमा को आगे कर यात्रा कर सकते है।

टामस कुक कम्पनी द्वारा नवनिर्मित एस.एस.ओलिम्पिया नामक जल-जहाज को किराये पर लिया गया और उसी के एक कक्ष में श्रीगोपालजी को विराजमान किया गया। इस यात्रा में पंडित जी को भी साथ लिया गया।

पोथीखाना का काम पंडित जी ने शंकरलाल जी को सौंप दिये। पंडित जी के लिए विशेष रूप से एक रसोईया का भी प्रबन्ध किया गया। अपने निश्चय के अनुसार महाराजा 125 आदमियों के साथ 12 मई 1902 को बम्बई पहुँचकर समुद्र पूजन किया। समुन्द्र पूजन के लिए तेहतर रूपये ड़ेढ़ आना का सामान जमनालाल पतंगवाले के दुकान से लाया गया। इस जहाज में तीन चाँदी के बड़े-बड़े घड़ों में गंगाजल पंडित जी के लिए रखा गया। लंदन से वापस लौटते समय एक घड़ा समुद्र में पंडित जी ने विसर्जित किया। आज भी दो चाँदी का घड़ा जयपुर म्यूजियम में रखा हुआ है।

लंदन में ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों के संस्कृत विद्वानों से मिलने तथा वहाँ पर वेद-धर्म पर उनके व्याख्यान तथा तद्विषयक लंदन के समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रशंसाएँ, संस्कृत रत्नाकर के वेदांक तथा श्री मधुसूदन ओझा चरितामृत आदि में प्रकाशित हुए है। 26 जूलाई 1902 वेस्ट मिनिस्टर गजट तथा 23 जूलाई 1902 के 'दी सन' पत्रों में इनके विषय में टिप्पनियां प्रकाशित हुई उनका सारांश इस प्रकार है।

The westminister Gazette -26.07.1902

A Hindoo Savant in London

In the back ground of the group of personages, who have come to london for the coronation, The presence has remained unnoticed of a Hindoo Savant a great celebrity in India, a human store house of vedic wisdom and phylosophy. This is a

pundit Madhusudan Ojha a profound Sanskrit scholar. The pundits conversation in fluent sanskrit greatly interested the Cambridge orientalist in his Eastern visitor.

<u>The Sun 23.07.2002</u>

The Pundit visited professor Macdonald of Oxford who was greatly pleased to cultivate his acquaintance. Last sunday the Pundit was invited to Cambridge by Professor C. Eendall who with his wife gave him a warm reception. What intrested the cambridge orientalist most was the conversation of the Pundit in influent Sanskrit which is a rare treat now even in India while he was deeply impressed by the deep learning of his Eastern visitor.

लन्दन स्थित इण्डिया आफिस लाइब्रेरी के अध्यक्ष मिस्टर टोनी भी टॉमस साहब के साथ पंडित जी से मिलने आए। मि० टॉमस विनोदी स्वभाव के थे। उन्होने पंडित जी से विनोद किया :- ''श्रृणोमि लक्ष्म्या मधुसूदनं युतं, पश्यामि तु त्वामिह चैकमागतम्, मन्ये भवन्तं विवुधं विवेकिन, कुतस्त्वनैषीन्न सह श्रियं भवान्''। अर्थात् (सुनता हूँ कि लक्ष्मी सदा मधुसूदन के साथ ही रहती है परन्तु मैं आपको यहाँ अकेला ही आया हुआ देख रहा हूँ। आप तो विज्ञान और विवेकी है लक्ष्मी को साथ क्यों नही लायें?) प्रत्युत्पन्नमति आशुकवि पंडित जी ने तत्काल उत्तर दिया-

मधुसूदनस्यं दृष्ट्वा सरस्वतीलालने विशेषरूचिम्।
रोषादिवापसृतां लक्ष्मीमनुनेतुमत्र सोऽम्यायात्।।

अर्थात् (सरस्वती के लालन में मधुसूदन की विशेष रूचि देखकर लक्ष्मी रूठी सी होकर यहाँ चली आई है उसी को मनाकर ले जाने मधुसूदन यहाँ आया है।)

सम्राट के राज्याभिषेक के अवसर पर पंडित जी महाराज ने कुछ पद्य बनाकर इंगलिश अनुवाद सहित छपवाकर सम्राट को समर्पित किये थे, जिनकी सादर स्वीकृति के साथ सम्राट ने पंडित जी को मैडिल तथा एक लिखित धन्यवाद पत्र से सम्मानित किया।

दोनो विश्वविद्यालयों और अमूल्य भारतीय ग्रन्थ सम्पदा से निर्मित इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में पंडित जी के व्याख्यानों को सुनकर वहाँ के विद्वानों ने प्रसन्नता के साथ विस्मय प्रकट करते हुए कहा कि हम आज वेद के सम्बन्ध में नई सूचना प्राप्त कर रहे हैं। ऐसा वेदार्थ रहस्योद्घाटन आज तक किसी भारतीय अथवा इतरदेशीय विद्वान ने नहीं किया।

लन्दन यात्रा के दौरान पंडित जी ने वहाँ महाराजा से स्वीकृति प्राप्त कर पोथीखाना के

लिए उपयोगी पुस्तके **"Kegan Paul French- Tour and Company London"** से खरीद ली और वापस जयपुर आकर संग्रह में जमा करा दी।

उन पुस्तकों की सूची इस प्रकार है-

1. कोषितकी ब्राह्मण 2. वैतानसूत्र 3. यास्क निरूत 4. कौशिक सूत्र 5. मानव धर्मशास्त्र 6. वज्रछेदिका प्रज्ञापारमिता 7. सूखावती व्यूहः 8. शिलाक्षरपाली सर्वानुक्रमणी 9. वृहद्देवता 10. शाकटायन श्रौतसूत्र 11. लाट्यायन श्रौतसूत्र 12. बृहन्नारदीय पुराण 13. तांड्यमहाब्राह्मण 14. मानवश्रौतसूत्र 15. मानवगृहसूत्र 16. अथर्व वेद संहिताः 17. मंत्रसंहिता 18. शाकटायन व्याकरण 19. श्रौतपदार्थ निर्वचन 20. कोरोनेशन चित्रावली।

पंडित जी आत्मनिष्ठ थे। सदा तप स्वाध्याय मे ही लगे रहते थे। प्रचार-प्रसार और अनावश्यक वाग्विलास में उनकी रूचि नहीं थी। महाराजा भी उनको अपने से दूर रहने का अवकाश कम ही देते थे। फिर भी उनके असाधारण पाण्डित्य, वैदिक सहस्योद्घाटन की अदभूत शैली और प्रवचन प्रवीणता से सम्पर्क में आने वाले विद्वानों को सविस्मय आनन्द प्राप्त होता था। इसी माध्यम से पंडित जी के विद्वता की ख्याति देश में फैली और प्रमुख विद्वत समारोहो में उनको आमंत्रित किया जाने लगा।

सन् 1905 में प्रयाग के कुंभ और 1906 में काशी में कांग्रेस अधिवेशन पर भारत धर्ममहामंडल के महाधिवेशन हुए तब सभी भारतीय नरेशों को निमन्त्रण भेजा गया था। जयपुर नरेश ने अपने प्रतिनिधिरूप से पंडित मधुसूदन ओझा जी को इन अधिवेशन में भेजा। प्रयाग सम्मेलन में पंडित जी का विद्वतापूर्ण भाषण सुनकर सभापति दरभंगा नरेश सहित सभी विद्वद मंडली मुग्ध हो गई इसी अवसर पे उन्हे विद्यावाचस्पति एवं महामहोपदेशक उपाधियों से विभूषित किया गया। बहुत दिनों तक आपकी ख्याति कई समाचारपत्रों में प्रकाशित होती रही। उसी अवसर पर भारतवर्ष महामंडल की ओर से आपके अभिभाषण लाहौर, काशी, कलकत्ता आदि में बड़े जोरदार हुए जिससे उपस्थित जनता बहुत प्रभावित हुई और आपको बहुत सारे सम्मान पत्र समर्पित किए गए।

ऐसे अन्य अवसरो पर जयपुर से बाहर जाते समय पंडित जी पोथीखाना के सरिश्ते का काम तहसीलदार शंकरलाल जी को सौंप कर जाते थे। वह ऐसा समय था जब राजा की तरह पदाधिकारी भी वंश परम्परागत ही होते थे। पंडित जी इस विषय में आश्वस्त थे कि उनकी

जागीर और पद आदि उनके एकमात्र पुत्र प्रदुम्मन ओझाजी को ही प्राप्त होगा अतः महाराजा के समक्ष उपस्थित होकर काम सिखाने की स्वीकृति भी प्राप्त कर लिये थे। वे उनको धर्मसभा और वरणी की संभाल तथा पोथीखाना में भी साथ रखने लगे।

पंडित मधुसूदन झा वैदिक गहन विषयों के उद्घाटनार्थ शास्त्रों का अवलोकन तथा लेखन कार्य तो करते ही थे साथ ही जिज्ञासु वर्गों को प्रायः नित्य ही कुछ समय अनेक विषयों को समझाया करते थे। आपकी प्रवचन शैली बहुत ही उच्चकोटि की थी आप श्रोताओं के हृदय में वस्तुज्ञान पूर्ण रूपेण जमा देते। कोई भी विषय जब तक जिज्ञासुओं की समझ में पूरे तौर से न आ जाता तब तक घंटो अनेक प्रकार से उस विषय की मीमांसा करते रहते। इस कार्य में उनका मस्तिष्क कभी नही थकता था। इस अत्यधिक परिश्रम के कारण पाचन शक्ति की कमी से उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। परन्तु लिखने या बोलने में वे कभी नहीं थकते थे। उनका शरीर बहुत कृश था। वे बहुत अल्पाहारी थे। कभी कभी वे अपनी धुन में भोजन तक करना भूल जाते थे।

पंडित जी महाराज के समीप देश-विदेश से भी लोग नई-नई शंकाओं को सुलझाने के लिए आते थे। विदित है कि स्वामी विवेकानन्द भी उनसे मिलने जयपुर आये थे। वर्त्तमान जयपुर नरेश महाराज श्री 108 श्री मानसिंह जी को कुमार अवस्था में हिन्दी संस्कृत की प्रथम शिक्षा का आरम्भ पंडित जी महाराज से ही कराया गया था। स्व0 भूतपूर्व महाराज माधव सिंह जी के अनुरूप वर्त्तमान जयपुर नरेश भी धार्मिक विषयों में सभी परामर्श पंडित जी से ही लिया करते थे।

स्व0 श्रीमान दरभंगा महाराज रामेश्वर सिंह तत्पश्चात महाराज कामेश्वर सिंह जी का आप पर बड़ा ही प्रेम प्रसाद था। साथ ही आपकी इस अद्वितीय विद्वता को वे अपना निजी गौरव समझते थे। तत्कालीन अलवर महाराज ने अपने पुत्र 108 श्री तेजसिंह जी के यज्ञोपवीत के अवसर पर आपसे ही दीक्षा ग्रहण करवायी थी और आपको अपना सर्वश्रेष्ठ गुरू माना था।

पंडित जी की अधीति का विषय गूढ़, उनका अध्ययन गहन, प्रतिभा प्रखर और अभिव्यक्ति में अभिनवता थी। उनकी भाषा संस्कृत थी वे इसी में सोचते एवं लिखते थे।

वे स्वयं ही अपने हाथ से लेखन कार्य करते थे। और चित्र बनाते थे। इस कारण उन्होने अनुभव किया कि वे जितना कुछ सोचते है वह पूर्णरूप से शीघ्रता से लिपिबद्ध नहीं हो पाता है। अतः अन्य संस्कृत विद्वानों का सहयोग लिया करते थे।

पंडित मधुसूदन जी की हवेली के प्रथम तल तीन भागों में था 1. आनन्द महल, 2. श्रृंगार महल तथा 3. शीश महल। पंडित जी अपना लेखन कार्य शीश महल में ही किया करते थे। वे

उठते-बैठते, चलते-फिरते भी वेद के गूढ़ विषयों पर ही मनन करते रहते थे तथा विचार में कोई नई बात आते ही उसे दिवालों पर अंकित कर देते थे जिससे उनके कक्ष का चारो दिवाल उनके द्वारा लिखित पंक्तियों, टिप्पणीयों से भरा हुआ था। इसे देखने का सौभाग्य पद्मवीर जी को 1962 में प्राप्त हुआ था। वे उसी शीश महल में रहा करते थे।

वि० सं० 1993 (वर्ष 1936 ई०) में अखिल भारतवर्षीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन की ओर से जयपुर के गणमान्य सरदारों, विद्वानों और सेठ साहुकारों की स्वागत समिति के तत्वाधान में पंडित जी महाराज के 70 वें वर्ष के उपलक्ष में आचार्य प्रवर गोस्वामी श्री 1008 श्री गोकुलनाथ जी महाराज शुद्धादैत संप्रदायाचार्य मुम्बई के सभापतित्व में रामनिवास बाग के अलवर्ट हॉल में हीरक जयन्ती मनाई गई थी जिसमें बाहर से अनेक प्रसिद्ध विद्वान म०म० हाथी भाई शास्त्री जी, राजपंडित जामनगर (काठियावाड़), म०म० पं० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित, राजपंडित सोलन (पंजाब), विद्यामार्तण्ड पं० सीताराम शास्त्री भिवानी, पं० विद्याधर शास्त्री जी, एम० ए० प्रोफेसर, डंगर कॉलेज बीकानेर आदि भी सम्मिलित हुए थे। संस्कृत रत्नाकर मासिक पत्र का (वेदांग) नाम का विशेषांक और अभिनन्दन पत्र पंडित जी महाराज को समर्पित किया गया था।

सन् 1937 ई० की एक पत्रावली में पंडित जी अपने काम के विषय में लिखा था-

''वेद का रिसर्च करीब पचीस तीस वर्ष से मुस्तैदी से जारी है। इसमें दस श्रेणी विभाग है। हर एक श्रेणी में बहुत से चैपटर है जिसमें से करीब पचास से भी ज्यादा 70-80 चैपटर तैयार है। इनमें से कुछ छप चुके है कुछ बिना छपे रखे है। इसके मुतअल्लिक तस्वीरे चार श्रेणी में बँटे है।-

1. भूगोल - जमीन के मुल्कों के नक्से
2. खगोल - आसमान के ग्रहों के नक्से
3. वेद विज्ञान - हिन्दु साइन्स के नक्से
4. यज्ञ विज्ञान

इस रिसर्च में जितनी किताबे तैयार की जायेगी उनकी एक अलग लिस्ट भी तैयार है।'' जिसे कितने लोगो ने पसंद कर किसी-किसी मन्थली में प्रकाशित भी किया है। इस रिसर्च की बहुत सी छपी किताबें को हर तरफ के लोगों ने बहुत पसंद किया है।

पंडित मधुसूदन ओझा जी ने वेद, उपनिषद, स्मृति पुराण और शास्त्रों का अध्ययन कर विषयों पर सम्यक एवं प्रमाणिक विवेचना के क्रम में जीव की उत्पति से लेकर वर्षा, ज्योतिष,

न्याय, नीति, संगीत, चित्रकला, आगम-निगम, जीवन, शरीर, पित्तर लगभग सभी विषयों पर विस्तार से अपने ग्रंथों में व्याख्या किया है।

एक जगह लिखते है कि मनुष्य जो भी सोचता है वह कर सकता है अर्थात हो सकता है। नहीं होने बाली बात कोई भी मनुष्य सोंच ही नही सकता। उनका विश्लेषण है कि कुछ भी होने के लिए यंत्र, तंत्र एवं मंत्र से सिद्धी होती है अर्थात उपकरण, व्यवस्था एवं संचालन।

पं0 मधुसूदन जी पितर एवं वंश पर लिखा कि एक प्राणी में कुल 84 कलाजीव होते है। जिसमें मात्र 28 कलाजीव उस व्यक्ति का अपना होता है जो उसके आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन और कर्म से निर्मित होता है बाकी के 56 कलाजीव उनके पूर्वजों से आता है जो निम्न प्रकार हैः-

1. स्वयं का - 28, 2. पिता का - 21, 3. पितामह का - 15, 4. परपितामह का -10, 5. वृद्ध परपितामह का - 6, 6. अति वृद्ध परपितामह - 3 एवं 7. परमाति वृद्ध परपितामह-1 कुल- 84 कलाजीव। इस तरह सात वंशों का सम्बन्ध भी स्वतः प्रकाटेय है।

उन्होने तो पंचतत्व से निर्मित शरीर में अवस्थित प्राण (आत्मा) की जिस सुक्ष्म तत्व से निर्माण हुआ उसकी भी विवेचना की है।

पंडित जी द्वारा बताये गये वेद के गूढ़ रहस्यों को लिखने की चेष्टा करते ही मेरा कलम कापने लगता हैं। उनके कृतित्व पर और अधिक लिखने की मेरी सामर्थ्य नहीं। शेष शोधकर्त्ताओं के लिए।

राज्यपंडित मधुसूदन ओझा विद्यावाचस्पति।

वि0 सं0 1996 भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा (28 सितम्बर सन् 1939) को केवल दो तीन दिन अस्वस्थ रहकर गुरूवर पंडित जी का अचानक स्वर्गवास हो गया। स्थानीय सिविल सर्जन का कथन था कि यह दिमागी उत्कट परिश्रम का आघात हृदय पर हुआ। पंडित जी की पत्नी का स्वर्गवास वि0 सं0 1962 (वर्ष 1905 ई0) में ही हो चुकी थी केवल एकमात्र पुत्र पंडित पद्युम्न जी जो उन दिनों अलवर नरेश के पास थे जिन्हे आपके अस्वस्थ होते ही तार देकर बुला लिया गया। पंडित जी ने अपने अंतिम समय में स्वरचित ग्रन्थों को प्रकाशित करने की एकमात्र इच्छा अपने पुत्र के समक्ष प्रकट की जिसके लिए आपके पुत्र ने दृढ़ प्रतिज्ञा की।

उस दिन सम्पूर्ण नगर में शोक छाया हुआ था। राजकीय उच्च कर्मचारियों व राजकीय सम्मान के साथ आपका शव श्मशान पहुँचाया गया। वहाँ शव को स्नान कराकर विभूति तिलक

लगाकर जो सूर्याभिमुख बैठाया गया तो मुख पर विज्ञान ज्योति का ऐसा अद्‌भूत दर्शन हुआ कि सभी लोग आश्चर्यचकित होकर प्रणाम करने लगे। यह वैदिक विज्ञान का प्रत्यक्ष चमत्कार था। आपकी उत्तरक्रिया श्राद्धादिक शास्त्रीय विधि विधान तथा राज्य के सम्मान के अनुसार आपके सुपुत्र ने बड़ी श्रद्धा से किया। मासिक क्षयाह में ब्राह्मण भोजनादिक होते रह कर वार्षिक श्राद्ध के अनन्तर ही पितृपक्ष में पं० प्रद्युम्न जी ने गया श्राद्ध भी सविधि सम्पन्न कर डाला।

पंडित जी के स्वर्गारोहन के अवसर पर समाचार पत्रों में ''वैदिक विज्ञान का सूर्य अस्त'' यह हैडिंग निकला था। अलवर, दरभंगा आदि कई नरेशों, महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी, प्रयाग के वाइसचांसलर डा० गंगानाथ झा आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों के संवेदना सूचक बहुत से तार व पत्र आए थे। बहुत स्थानों में शोक सभाएँ हुई। जयपुर में भी रायबहादुर पं० अमरनाथ जी अटल एम० ए० फाईनेन्स मिनिस्टर के सभापतित्व में महाराजा संस्कृत कॉलेज में बड़े-बड़े सरदारों, उच्च कर्मचारियों, विद्वानों तथा गणमान्य जयपुरवासियों की उपस्थिति में एक विराट शोक सभा की गई।

कहीं-कहीं उद्‌हरण मिलता है कि उनके द्वारा 288 से अधिक ग्रन्थों की रचना की गई थी, जिसमें से घर पर उपलब्धों में से लगभग 108 से अधिक ग्रन्थो को उनके पुत्र ने प्रकाशित करवाया शेष ग्रन्थों में जो जयपुर महाराज के पोथीखाना में थे के अनुपलब्ध हो जाने से तथा उनके पुत्र प्रद्युम्न जी के स्वार्गवास हो जाने पर घर में रख रहे पाण्डुलीपि भी यत्र-तत्र होकर बिखर गये। पंडित मधुसूदन झा जी की सारी पुस्तकों का प्रकाशन पंडित मधुसूदन ओझा के नाम से हुआ क्योंकि वे जयपुर में ओझा जी से प्रचलित थे, इसका दो कारण एक तो झा जी को पुकारते समय ओ झा जी कहते कहते ओझा जी कहने लगे। दूसरा मिथिला में दामाद को ओझाजी कहा जाता है। और पंडित जी का विवाह अलवर के राजगुरू चंचल झा की पुत्री से हुआ था, चंचल झा जी एवं उनके परिवार के लोग हमेशा जयपुर आते-जाते रहते थे। तथा वे लोग उन्हे ओझा जी ही सम्बोधित करते थे।

पंडित मधुसूदन ओझा जी के स्वर्गवास के बाद उनके एकमात्र पुत्र पं० प्रद्युम्न ओझा जी अपने पिता श्री पंडित जी द्वारा लिखित ग्रन्थों का कुछ विद्वान पंडितों के सहयोग से संकलित एवं सिलसिलेवार कर प्रकाशित करबाने में लग गये तथा लगभग 108 ग्रन्थों का प्रकाशन करबाया उनका प्रण था कि पंडित जी द्वारा रचित ग्रन्थों के प्रकाशन में अर्थ विपन्नता को आड़े नहीं आने देंगे भले ही उनका मकान बिक जाय।

वर्ष 1965 में पं० प्रद्युम्न ओझा जी के अचानक सोये अवस्था में ब्रेन हेमरेज से हुए मौत के बाद उनके चारो पुत्रों एवं तीन पुत्रियों में शान्ता शर्मा को छोड़ किसी अन्य ने या तो आर्थिक विपन्नता अथवा पारिवारिक समस्या अथवा अरूचि के कारण पंडित जी की रचित ग्रन्थों के रख-रखाव या प्रकाशन में रूचि नहीं दिखलाई जिस कारण पं० जी की अप्रकाशित ग्रन्थें एवं प्रकाशित ग्रन्थों यत्र-तत्र विखर गये। जिन्हे जो मिला अपने पास रख लिये। इस कारण कई विश्वविद्यालयों में पंडित जी की पुस्तके पाठ्यक्रम में सम्मिलित थी अनुपलब्धता के कारण पाठ्यक्रम से हटा दिया गया।

यह भी देखने-सुनने में आता है कि पंडित मधुसूदन जी के कुछ शिष्य तथा पं० प्रद्युम्न जी के सहयोग में रहे कई पंडितों में से कुछेक ने पंडित जी की रचित ग्रन्थों की मूल प्रति अपने पास रखकर अपने हस्तलिपी में लिखकर अपने नाम से प्रकाशित कर रखे है। किन्तु भाषा शैली से पकड़े जाते है।

पंडित मधुसूदन ओझा जी का पारिवारिक वंश-वृक्ष संलग्न कर रही हूँ।

वंशवृक्ष

(पं0 मधुसूदन शर्मणः जी के पाचवें वंशज रेयांश के पैत्रिक शाखा का विवरण)

पंडित प्रद्युम्न शर्मा (ओझाजी) के स्वर्गवास के बाद उनके संतानों में सम्पति विवाद उठ खड़ा हुआ अंततः आपसी सहमति बनी और पूर्व से मौखिक समझौता के अनुसार ही बड़े पुत्र पद्मनाथ शर्मा जी को विहार प्रान्त स्थित सारी सम्पति मिली और शेष संतानों को राजस्थान प्रान्त स्थित सारी सम्पति प्राप्त हुई जिसमें पंडित जी की त्रिपोलिया बाजार के विद्याधर रास्ते में स्थित मूल हवेली जिसमें पं० मधुसूदन ओझा जी एवं उनके पुत्र पं० प्रद्युम्न ओझा जी ताजीवन रहा करते थे साथ अन्य भवन एवं जायदाद पद्मलोचन ओझा एवं रमेश ओझा जी को मिला। पद्मानन्द ओझा एवं शान्ता शर्मा जी को गाँधी नगर स्थित भवन एवं जायदाद प्राप्त हुआ।

पंडित प्रद्युम्न ओझा जी ने अपने पिता के पुस्तकों के प्रकाशनार्थ एक ट्रष्ट का निर्माण भी किया था जिसमें उन्होने कुछ सम्पतियाँ भी दी थी। ट्रस्ट में वे अपने निकटवर्ती एवं विश्वासपात्र कुछ विद्वानों एवं मित्रों को सदस्य बनाये थे ताकि उनके बाद भी पंडित मधुसूदन ओझा जी की रचित ग्रन्थों का प्रकाशन होता रहे किन्तु ऐसा हुआ नहीं बल्कि उनकी दी गई सम्पति भी हस्तगत कर ली गई।

पंडित मधुसूदन ओझा जी का कर्मक्षेत्र जयपुर (राजस्थान) रहा तथा शिक्षा बनारस में हुआ। वे अपने जन्म धरती ग्राम गाढ़ा कम ही आया जाया करते थे जिसकारण उनके कृतित्व एवं प्रतिभा का प्रकाश जितना राजस्थान, बनारस, प्रयागराज, लखनऊ एवं दरभंगा में फैला उतना उनके जन्म धरती पर नहीं फैल सका। फिर भी तत्समय के स्थानीय विद्वानों के बीच पूजनीय रहे है।

पंडित मधुसूदन शर्मा जी के प्रपौत्र पद्मवीर शर्मा जी का जन्म एवं जीवन ग्राम गाढ़ा में ही बीता। वे तो पेशा से अधिवक्ता थे किन्तु उनकी रूचि हमेशा से पंडित जी की कृतित्व एवं व्यक्तित्व की ओर रहा। अधिवक्ता रहते हुए भी अपने उदार व्यक्तित्व एवं परोपकारी स्वभाव के कारण अल्प आय ही अर्जित कर पाते थे फिर भी पंडित जी के सन्दर्भ में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा करने में लगे रहे।

अपने ब्राह्मण धर्म का पालन करते हुए समय-समय पर विभिन्न यज्ञ, पूजा, प्रवचन, कीर्तन-भजन, धार्मिक समारोहों का आयोजन करते रहे हैं। उनकी ईच्छा रहती आई कि पंडित मधुसूदन शर्मणः जी के जन्म स्थान ग्राम गाढ़ा में उनकी कोई अविस्मणनीय स्मृति रहे। इसके लिए वे जयपुर, जोधपुर, बनारस आदि स्थानों का भ्रमण कर पंडिज से सम्बन्धित विचार, ग्रन्थ, चित्र, सामग्री जुटाते रहे और उनके जन्मदिन भाद्रकृष्ण अष्टमी को अपने आवास पर विचार गोष्ठी का आयोजन करते रहे है।

पंडित मधुसूदन शर्मा जी के 150 वे जन्म जयन्ती वि0 सं0 2073 के भाद्रकृष्ण अष्टमी वर्ष 2016 को एक संस्था पं0 मधुसूदन शर्मणः वेद-विज्ञान शोध केन्द्र, गाढ़ा की स्थापना की ताकि शोध करनेवाले छात्र या जिज्ञासु व्यक्ति पंडित जी की रचनाओं का अध्ययन या पाठन कर सके।

पद्मवीर जी पंडिज जी का संगमरमर पत्थर से निर्मित प्रतिमा की भी स्थापना करना चाह रहे थे जिसके लिए वे विगत वर्षो से लगे हुए थे।

और आज 6 सितम्बर 2023 को पंडित मधुसूदन शर्मा (ओझा) जी के 157 वें जन्म-जयन्ति वि0 सं0 2080 भाद्रकृष्ण अष्टमी को आप सभी विद्या विभूषित विद्वदजनों की उपस्थिति में फलीभूत हो रहा है। और पं0 मधुसूदन जी की प्रतिमा का अनावरण किया जा रहा है। आपकी उपस्थिति के लिए आप सभी विद्वदजनों के शरीर में बसे पवित्र आत्मा एवं आपके द्वारा अर्जित ज्ञान को कोटिशः प्रणाम।

-: नीलम शर्मा

लेखिका : नीलम शर्मा

(पंडित मधुसूदन शर्मा (ओझा) जी के परिवार की कुलवधू)

जन्म : 25 दिसम्बर 1952

शिक्षा : स्नातक

व्यस्तता : गृह कार्य, पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन एवं सहधर्मी पद्मवीर शर्मा जी के कार्यों एवं अभिरूचि में सहयोग करना।

अभिरूचि : पण्डित मधुसूदन शर्मा जी की रचित ग्रन्थों का पठन एवं मनन।

सामाजिक : सरपंच, ग्राम पंचायत बहिलवारा उर्फ गाढ़ा (वर्ष : 2016-2021)

वर्त्तमान उपनिदेशक : पं0 मधुसूदन शर्मणः वेद विज्ञान शोध केन्द्र गाढ़ा।

स्थायी निवास : ग्राम +पो0- गाढ़ा, वार्ड सं0-12
भाया - मानिकचौक, अंचल- रून्नीसैदपुर
जिला- सीतामढ़ी (बिहार) 843323